



Mr. Saurav Sushmita

11 Oct 1993

08:00 PM

Amravati

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121933401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 11/10/1993
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 20:00:00 घंटे
इष्ट _____: 34:27:50 घटी
स्थान _____: Amravati
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 20:58:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:18:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:41:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:13 घंटे
साम्पातिक काल _____: 21:02:05 घंटे
सूर्योदय _____: 06:12:51 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:57:49 घंटे
दिनमान _____: 11:44:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 24:30:49 कन्या
लग्न के अंश _____: 01:43:39 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: मघा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: शुभ
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मा-माणिक
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	आश्विन	19
पंजाबी	संवत : 2050	आश्विन	26
बंगाली	सन् : 1400	आश्विन	25
तमिल	संवत : 2050	पुरुटासी	25
केरल	कोल्लम : 1169	कन्नी	25
नेपाली	संवत : 2050	आश्विन	26
चैत्रादि	संवत : 2050	आश्विन	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2050	भाद्रपद	कृष्ण 10

पंचांग

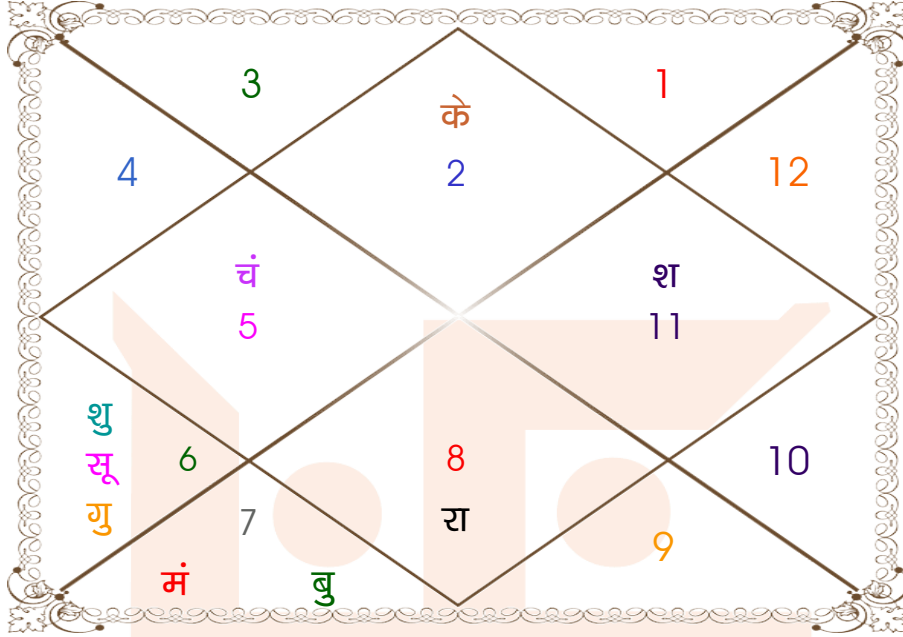
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 09:53:14
जन्म तिथि _____ : 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:47:22 घंटे
जन्म योग _____ : मघा
सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
योग समाप्ति काल _____ : 17:57:38 घंटे
जन्म योग _____ : शुभ
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 09:53:14 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 00:31:35
भभोग _____ : 54:48:16
भोग्य दशा काल _____ : केतु 6 वर्ष 11 मा 6 दि

घात चक्र

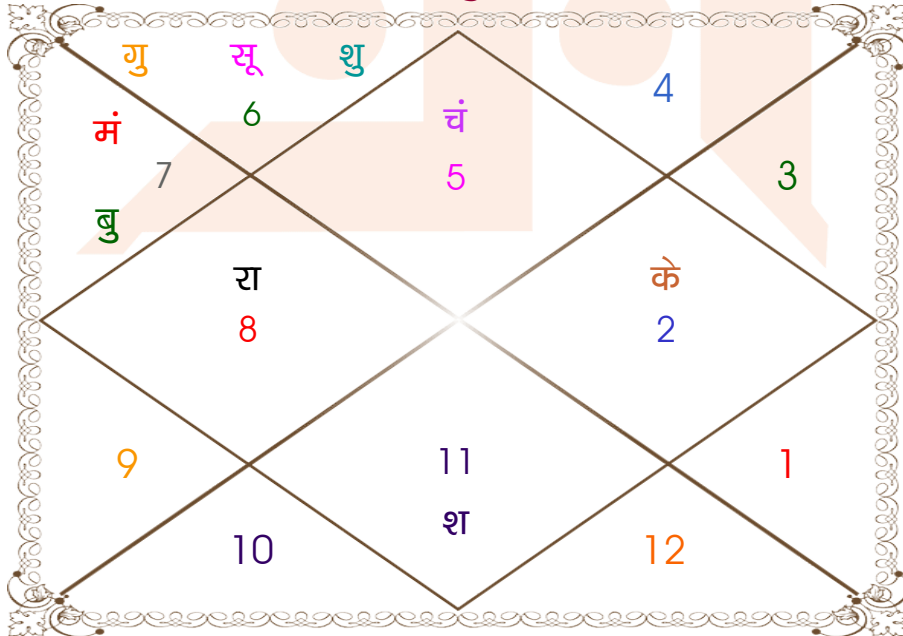
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : मकर
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		के ल	
श			
			चं
रा	बु मं	शु सू गु	

लग्न कुंडली

के ल			श
चं		मं बु	रा
शु गु	सू		

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 11मा 6दि
केतु

11/10/1993

18/09/2113

केतु	17/09/2000
शुक्र	17/09/2020
सूर्य	17/09/2026
चन्द्र	17/09/2036
मंगल	18/09/2043
राहु	17/09/2061
गुरु	17/09/2077
शनि	17/09/2096
बुध	18/09/2113

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 11मा 13दि
भामरी

24/09/2025

24/09/2029

भामरी	05/03/2026
भद्रिका	24/09/2026
उल्का	26/05/2027
सिद्धा	05/03/2028
संकटा	24/01/2029
मंगला	05/03/2029
पिंगला	25/05/2029
धान्या	24/09/2029

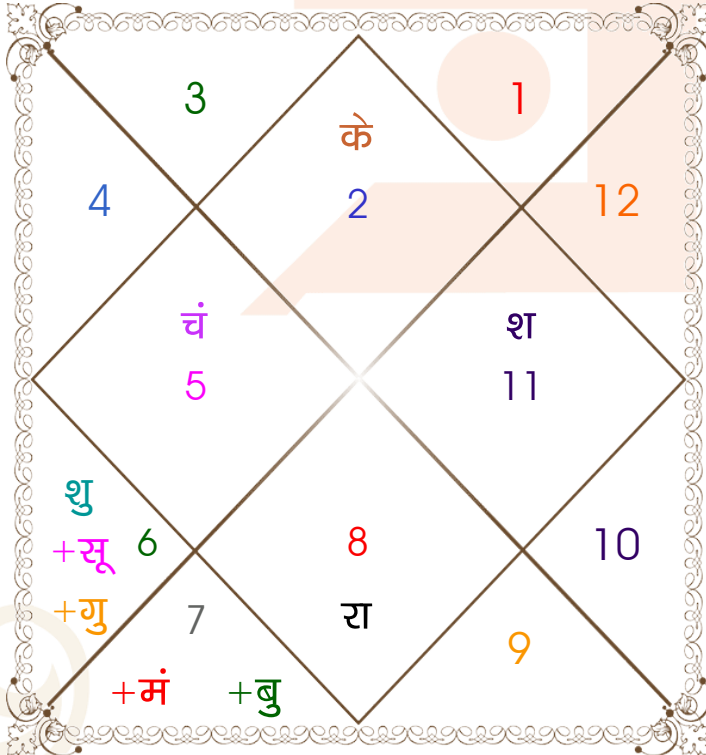
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	01:43:39	389:58:45	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	---
सूर्य			कन्या	24:30:49	00:59:22	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	सम राशि
चंद्र			सिंह	00:07:35	14:24:21	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	मित्र राशि
मंगल			तुला	16:06:42	00:41:19	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
बुध			तुला	19:14:20	01:05:17	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मित्र राशि
गुरु		अ	कन्या	29:47:49	00:13:01	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	00:46:27	01:14:10	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	नीच राशि
शनि	व		कुंभ	00:05:28	00:01:40	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
राहु	व		वृश्चि	10:17:04	00:05:08	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	10:17:04	00:05:08	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	चंद्र	सम राशि
हर्ष			धनु	24:32:17	00:00:43	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
नेप			धनु	24:38:16	00:00:23	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	---
प्लूटो			वृश्चि	00:14:20	00:02:03	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	चंद्र	---
दशम भाव			मक	19:16:53	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	बुध	--

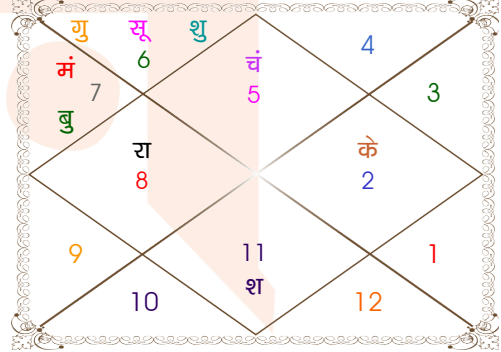
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:27

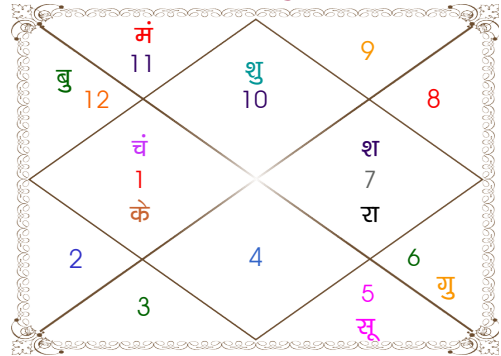
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 14:39:11	वृष 01:43:39
2	वृष 14:39:11	वृष 27:34:44
3	मिथुन 10:30:16	मिथुन 23:25:48
4	कर्क 06:21:20	कर्क 19:16:53
5	सिंह 06:21:20	सिंह 23:25:48
6	कन्या 10:30:16	कन्या 27:34:44
7	तुला 14:39:11	वृश्चिक 01:43:39
8	वृश्चिक 14:39:11	वृश्चिक 27:34:44
9	धनु 10:30:16	धनु 23:25:48
10	मकर 06:21:20	मकर 19:16:53
11	कुम्भ 06:21:20	कुम्भ 23:25:48
12	मीन 10:30:16	मीन 27:34:44

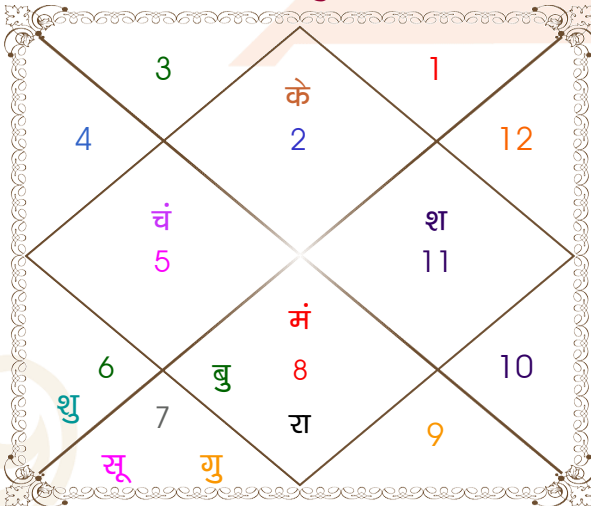
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	01:43:39
2	वृष	28:43:31
3	मिथुन	23:19:53
4	कर्क	19:16:53
5	सिंह	19:36:16
6	कन्या	25:06:38
7	वृश्चिक	01:43:39
8	वृश्चिक	28:43:31
9	धनु	23:19:53
10	मकर	19:16:53
11	कुम्भ	19:36:16
12	मीन	25:06:38

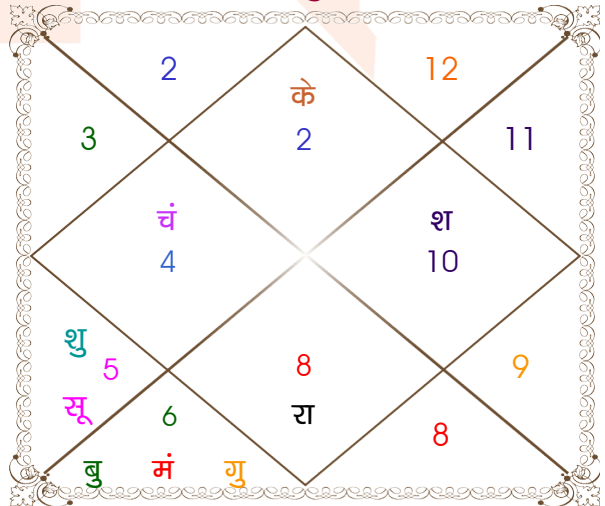
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



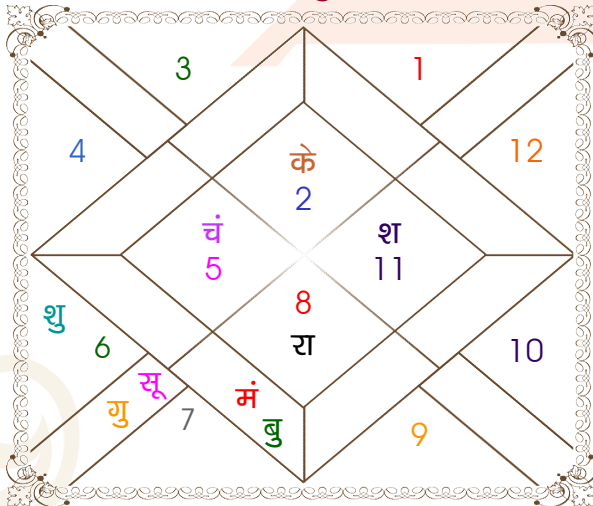
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	शक्त	उपवेशन	1.03	23 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	बाल	मुदित	आगमन	6.19	62 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा	शक्त	सभा	2.60	59 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	5.40	70 %
गुरु	आत्मा	धन	बाल	विकल	प्रकाश	0.00	48 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	मृत	भीत	नृत्यलिप्सा	1.55	43 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	स्वस्थ	नेत्रपाणि	4.44	46 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	उपवेशन	0.00	33 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	निपीदित	नृत्यलिप्सा	0.00	33 %
कुल						21.22	

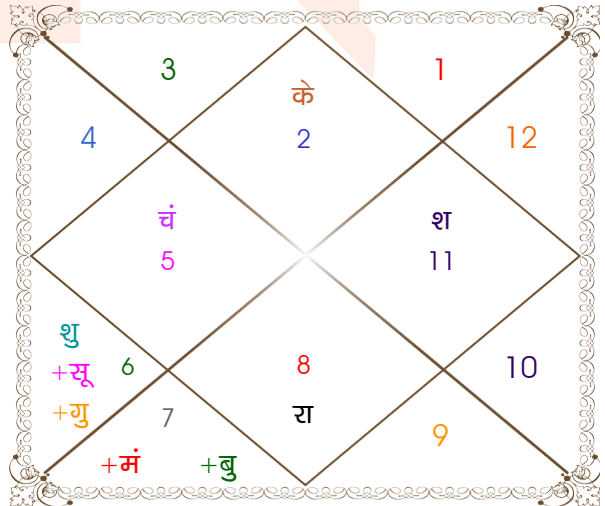
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 11 मास 6 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
11/10/1993	17/09/2000	17/09/2020	17/09/2026	17/09/2036
17/09/2000	17/09/2020	17/09/2026	17/09/2036	18/09/2043
केतु 13/02/1994	शुक्र 17/01/2004	सूर्य 04/01/2021	चंद्र 19/07/2027	मंगल 13/02/2037
शुक्र 15/04/1995	सूर्य 17/01/2005	चंद्र 06/07/2021	मंगल 17/02/2028	राहु 03/03/2038
सूर्य 21/08/1995	चंद्र 17/09/2006	मंगल 11/11/2021	राहु 18/08/2029	गुरु 07/02/2039
चंद्र 21/03/1996	मंगल 17/11/2007	राहु 06/10/2022	गुरु 18/12/2030	शनि 18/03/2040
मंगल 17/08/1996	राहु 17/11/2010	गुरु 25/07/2023	शनि 18/07/2032	बुध 15/03/2041
राहु 05/09/1997	गुरु 18/07/2013	शनि 06/07/2024	बुध 17/12/2033	केतु 12/08/2041
गुरु 12/08/1998	शनि 17/09/2016	बुध 12/05/2025	केतु 18/07/2034	शुक्र 12/10/2042
शनि 21/09/1999	बुध 19/07/2019	केतु 17/09/2025	शुक्र 18/03/2036	सूर्य 17/02/2043
बुध 17/09/2000	केतु 17/09/2020	शुक्र 17/09/2026	सूर्य 17/09/2036	चंद्र 18/09/2043

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
18/09/2043	17/09/2061	17/09/2077	17/09/2096	18/09/2113
17/09/2061	17/09/2077	17/09/2096	18/09/2113	00/00/0000
राहु 31/05/2046	गुरु 05/11/2063	शनि 20/09/2080	बुध 13/02/2099	केतु 12/10/2113
गुरु 23/10/2048	शनि 19/05/2066	बुध 31/05/2083	केतु 11/02/2100	00/00/0000
शनि 30/08/2051	बुध 23/08/2068	केतु 09/07/2084	शुक्र 13/12/2102	00/00/0000
बुध 19/03/2054	केतु 30/07/2069	शुक्र 08/09/2087	सूर्य 19/10/2103	00/00/0000
केतु 06/04/2055	शुक्र 30/03/2072	सूर्य 20/08/2088	चंद्र 19/03/2105	00/00/0000
शुक्र 06/04/2058	सूर्य 17/01/2073	चंद्र 22/03/2090	मंगल 17/03/2106	00/00/0000
सूर्य 01/03/2059	चंद्र 19/05/2074	मंगल 01/05/2091	राहु 03/10/2108	00/00/0000
चंद्र 30/08/2060	मंगल 24/04/2075	राहु 07/03/2094	गुरु 09/01/2111	00/00/0000
मंगल 17/09/2061	राहु 17/09/2077	गुरु 17/09/2096	शनि 18/09/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 11 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु
17/09/2025	17/09/2026	19/07/2027	17/02/2028	18/08/2029
17/09/2026	19/07/2027	17/02/2028	18/08/2029	18/12/2030
शुक्र 17/11/2025	चंद्र 13/10/2026	मंगल 31/07/2027	राहु 09/05/2028	गुरु 22/10/2029
सूर्य 05/12/2025	मंगल 30/10/2026	राहु 01/09/2027	गुरु 21/07/2028	शनि 07/01/2030
चंद्र 05/01/2026	राहु 15/12/2026	गुरु 30/09/2027	शनि 16/10/2028	बुध 17/03/2030
मंगल 26/01/2026	गुरु 25/01/2027	शनि 02/11/2027	बुध 01/01/2029	केतु 14/04/2030
राहु 22/03/2026	शनि 14/03/2027	बुध 02/12/2027	केतु 02/02/2029	शुक्र 04/07/2030
गुरु 09/05/2026	बुध 26/04/2027	केतु 15/12/2027	शुक्र 05/05/2029	सूर्य 29/07/2030
शनि 06/07/2026	केतु 14/05/2027	शुक्र 19/01/2028	सूर्य 01/06/2029	चंद्र 07/09/2030
बुध 27/08/2026	शुक्र 03/07/2027	सूर्य 30/01/2028	चंद्र 17/07/2029	मंगल 06/10/2030
केतु 17/09/2026	सूर्य 19/07/2027	चंद्र 17/02/2028	मंगल 18/08/2029	राहु 18/12/2030
चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य
18/12/2030	18/07/2032	17/12/2033	18/07/2034	18/03/2036
18/07/2032	17/12/2033	18/07/2034	18/03/2036	17/09/2036
शनि 19/03/2031	बुध 29/09/2032	केतु 30/12/2033	शुक्र 28/10/2034	सूर्य 27/03/2036
बुध 09/06/2031	केतु 29/10/2032	शुक्र 03/02/2034	सूर्य 27/11/2034	चंद्र 12/04/2036
केतु 13/07/2031	शुक्र 24/01/2033	सूर्य 14/02/2034	चंद्र 17/01/2035	मंगल 22/04/2036
शुक्र 17/10/2031	सूर्य 19/02/2033	चंद्र 04/03/2034	मंगल 22/02/2035	राहु 20/05/2036
सूर्य 15/11/2031	चंद्र 03/04/2033	मंगल 16/03/2034	राहु 24/05/2035	गुरु 13/06/2036
चंद्र 02/01/2032	मंगल 03/05/2033	राहु 17/04/2034	गुरु 13/08/2035	शनि 12/07/2036
मंगल 05/02/2032	राहु 19/07/2033	गुरु 16/05/2034	शनि 17/11/2035	बुध 07/08/2036
राहु 02/05/2032	गुरु 26/09/2033	शनि 18/06/2034	बुध 12/02/2036	केतु 17/08/2036
गुरु 18/07/2032	शनि 17/12/2033	बुध 18/07/2034	केतु 18/03/2036	शुक्र 17/09/2036
मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध
17/09/2036	13/02/2037	03/03/2038	07/02/2039	18/03/2040
13/02/2037	03/03/2038	07/02/2039	18/03/2040	15/03/2041
मंगल 26/09/2036	राहु 12/04/2037	गुरु 18/04/2038	शनि 12/04/2039	बुध 09/05/2040
राहु 18/10/2036	गुरु 02/06/2037	शनि 11/06/2038	बुध 09/06/2039	केतु 30/05/2040
गुरु 07/11/2036	शनि 01/08/2037	बुध 29/07/2038	केतु 02/07/2039	शुक्र 29/07/2040
शनि 30/11/2036	बुध 25/09/2037	केतु 18/08/2038	शुक्र 08/09/2039	सूर्य 16/08/2040
बुध 22/12/2036	केतु 17/10/2037	शुक्र 14/10/2038	सूर्य 28/09/2039	चंद्र 15/09/2040
केतु 30/12/2036	शुक्र 20/12/2037	सूर्य 31/10/2038	चंद्र 01/11/2039	मंगल 06/10/2040
शुक्र 24/01/2037	सूर्य 08/01/2038	चंद्र 28/11/2038	मंगल 25/11/2039	राहु 30/11/2040
सूर्य 01/02/2037	चंद्र 09/02/2038	मंगल 18/12/2038	राहु 24/01/2040	गुरु 17/01/2041
चंद्र 13/02/2037	मंगल 03/03/2038	राहु 07/02/2039	गुरु 18/03/2040	शनि 15/03/2041

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु
15/03/2041	12/08/2041	12/10/2042	17/02/2043	18/09/2043
12/08/2041	12/10/2042	17/02/2043	18/09/2043	31/05/2046
केतु 24/03/2041	शुक्र 22/10/2041	सूर्य 18/10/2042	चंद्र 06/03/2043	राहु 13/02/2044
शुक्र 18/04/2041	सूर्य 12/11/2041	चंद्र 29/10/2042	मंगल 19/03/2043	गुरु 23/06/2044
सूर्य 25/04/2041	चंद्र 17/12/2041	मंगल 05/11/2042	राहु 20/04/2043	शनि 26/11/2044
चंद्र 08/05/2041	मंगल 11/01/2042	राहु 24/11/2042	गुरु 18/05/2043	बुध 15/04/2045
मंगल 17/05/2041	राहु 16/03/2042	गुरु 11/12/2042	शनि 21/06/2043	केतु 11/06/2045
राहु 08/06/2041	गुरु 12/05/2042	शनि 01/01/2043	बुध 21/07/2043	शुक्र 23/11/2045
गुरु 28/06/2041	शनि 18/07/2042	बुध 19/01/2043	केतु 02/08/2043	सूर्य 11/01/2046
शनि 21/07/2041	बुध 17/09/2042	केतु 26/01/2043	शुक्र 07/09/2043	चंद्र 03/04/2046
बुध 12/08/2041	केतु 12/10/2042	शुक्र 17/02/2043	सूर्य 18/09/2043	मंगल 31/05/2046
राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध	राहु - केतु	राहु - शुक्र
31/05/2046	23/10/2048	30/08/2051	19/03/2054	06/04/2055
23/10/2048	30/08/2051	19/03/2054	06/04/2055	06/04/2058
गुरु 25/09/2046	शनि 06/04/2049	बुध 09/01/2052	केतु 10/04/2054	शुक्र 06/10/2055
शनि 10/02/2047	बुध 01/09/2049	केतु 04/03/2052	शुक्र 13/06/2054	सूर्य 30/11/2055
बुध 15/06/2047	केतु 31/10/2049	शुक्र 06/08/2052	सूर्य 02/07/2054	चंद्र 29/02/2056
केतु 05/08/2047	शुक्र 23/04/2050	सूर्य 21/09/2052	चंद्र 03/08/2054	मंगल 03/05/2056
शुक्र 29/12/2047	सूर्य 14/06/2050	चंद्र 08/12/2052	मंगल 26/08/2054	राहु 14/10/2056
सूर्य 11/02/2048	चंद्र 09/09/2050	मंगल 31/01/2053	राहु 22/10/2054	गुरु 09/03/2057
चंद्र 24/04/2048	मंगल 08/11/2050	राहु 20/06/2053	गुरु 12/12/2054	शनि 30/08/2057
मंगल 14/06/2048	राहु 14/04/2051	गुरु 22/10/2053	शनि 11/02/2055	बुध 01/02/2058
राहु 23/10/2048	गुरु 30/08/2051	शनि 19/03/2054	बुध 06/04/2055	केतु 06/04/2058
राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल	गुरु - गुरु	गुरु - शनि
06/04/2058	01/03/2059	30/08/2060	17/09/2061	05/11/2063
01/03/2059	30/08/2060	17/09/2061	05/11/2063	19/05/2066
सूर्य 22/04/2058	चंद्र 15/04/2059	मंगल 21/09/2060	गुरु 30/12/2061	शनि 31/03/2064
चंद्र 20/05/2058	मंगल 17/05/2059	राहु 17/11/2060	शनि 02/05/2062	बुध 09/08/2064
मंगल 08/06/2058	राहु 07/08/2059	गुरु 08/01/2061	बुध 21/08/2062	केतु 02/10/2064
राहु 27/07/2058	गुरु 20/10/2059	शनि 09/03/2061	केतु 05/10/2062	शुक्र 05/03/2065
गुरु 09/09/2058	शनि 14/01/2060	बुध 03/05/2061	शुक्र 12/02/2063	सूर्य 20/04/2065
शनि 31/10/2058	बुध 01/04/2060	केतु 25/05/2061	सूर्य 23/03/2063	चंद्र 06/07/2065
बुध 17/12/2058	केतु 03/05/2060	शुक्र 28/07/2061	चंद्र 27/05/2063	मंगल 29/08/2065
केतु 05/01/2059	शुक्र 02/08/2060	सूर्य 16/08/2061	मंगल 11/07/2063	राहु 15/01/2066
शुक्र 01/03/2059	सूर्य 30/08/2060	चंद्र 17/09/2061	राहु 05/11/2063	गुरु 19/05/2066

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

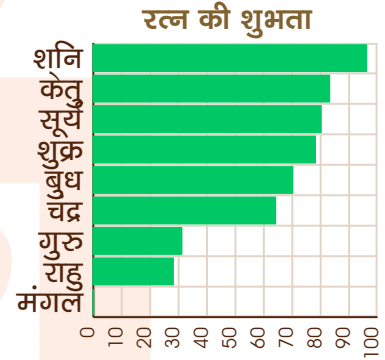
मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	96%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	83%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	80%	सन्तति सुख, सुख
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पन्ना	बुध	70%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	64%	सुख, पराक्रम
पुखराज	गुरु	31%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, हानि
गोमेद	राहु	28%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	17/09/2000	67%	52%	0%	70%	31%	84%	83%	3%	95%
शुक्र	17/09/2020	67%	52%	0%	77%	31%	91%	100%	41%	89%
सूर्य	17/09/2026	92%	70%	0%	70%	44%	66%	83%	3%	70%
चंद्र	17/09/2036	86%	77%	0%	77%	31%	78%	96%	3%	70%
मंगल	18/09/2043	86%	70%	0%	58%	44%	78%	96%	3%	89%
राहु	17/09/2061	67%	52%	0%	70%	31%	84%	100%	52%	70%
गुरु	17/09/2077	86%	70%	0%	58%	53%	66%	96%	28%	83%
शनि	17/09/2096	67%	52%	0%	77%	31%	84%	100%	41%	70%
बुध	18/09/2113	86%	52%	0%	83%	31%	84%	96%	28%	83%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराकम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप साझेदारी के कामों में जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। बनते कार्यों में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। पर कालान्तर में अपने आप व्यवधान हट जाता है। बड़े पद मिलने में भी थोड़ा बहुत कठिनाई आती है, पर जातक कुछ समय बाद अपने बौद्धिक बल से उस व्यवधान को समाप्त करने में सक्षम हो जाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी आंशिक रूप में कष्टमय हो जाता है। प्रेम प्रसंग में जातक को सफलता प्राप्त करने में आंशिक व्यवधान आ जाता है और गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना रहती है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक शत्रुओं से घिरा रहता है। शत्रु लोग जातक के ऊपर षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर उस षड्यन्त्र में कोई विशेष सफलता उनको नहीं मिलती है। जातक समय-समय पर गुप्त रोग से परेशान रहता है और रोग व्याधि में थोड़ा बहुत अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। पैतृक धन सम्पत्ति का मनोभिलाषित फल प्रायः जातक को नहीं मिलता है। जातक अपनी पैतृक सम्पत्ति को या तो दान कर देता है या नष्ट हो जाती है। यदि जातक किसी दूसरे को थोड़ा बहुत धन देता है तो वह धन प्रायः वापस नहीं आता। जिस कारण जातक को मानसिक परेशानी व चिन्ता थोड़ा बहुत घेरे रहती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को सन्तान सुख का प्रायः अभाव रहता है। जातक को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।

7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़तेरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त-विकार, धन-नाश का कारण बन सकता है।

बुध षष्ठ भाव में स्थित हैं, बुध की यह स्थिति आपके अपमान का कारण, चतुरता से शत्रुओं का दमन, मामा सुख प्राप्ति का कारक, मित्रों-छोटे भाई बहनों से शत्रुवत सम्बन्ध दे सकता है। परोपकारी, श्रेष्ठ वक्ता, आलोचक और व्याधिक्य का गुण देता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक धैर्यवान एवं सहनशील स्वभाव के होते हैं तथा परस्पर वार्तालाप में प्रायः मधुर शब्दों का ही उपयोग करते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता विद्यमान रहती है तथा अपनी परिश्रमशील प्रवृत्ति के कारण वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने में समर्थ होते हैं जिससे उन्हें समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। जीवन में वे सुखैश्वर्य से युक्त होकर भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हैं। यद्यपि उनका स्वभाव शांत होता है परन्तु पराक्रम एवं साहस का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी आपकी वाणी मधुर होगी तथा स्ववाक्चातुर्य से आप अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपके स्वभाव में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव विद्यमान होगा तथा क्रोध एवं चंचलता का भी यदा कदा समावेश हो सकता है। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा तथा सुखैश्वर्य से युक्त होकर अपने कार्यों को पूर्ण करेंगे।

आप एक उत्साही तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा इनसे जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलताओं को अर्जित करेंगे। आप अपने श्रेष्ठजनों को सन्तुष्ट रखने में भी सफल होंगे। आप में विद्वता का भाव विद्यमान रहेगा तथा कला एवं संगीत के प्रति भी अभिरुचि रहेगी।

लग्न में केतु की स्थिति के प्रभाव से आप एक साहसी पराक्रमी तथा तेजस्वी पुरुष होंगे तथा यदा कदा क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। अतः क्रोध पर आपको यथोचित नियंत्रण रखना चाहिए। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे लेकिन आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम तथा परिश्रम से सम्पन्न होंगे। साथ ही जीवन में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु उदारता का भी समय समय पर प्रदर्शन करते रहेंगे तथा अन्य जरूरतमंद लोगों को सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक कार्य कलापों को भी सम्पन्न करेंगे लेकिन अपने परिश्रम एवं योग्यता से ही आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा इच्छित धन वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके इनका उपभोग करेंगे। इस प्रकार आप परिश्रमी उत्साही एवं पराक्रम के भाव से युक्त होकर सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रुचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते हैं। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृत्ति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा चन्द्रमा भी मित्र राशि में चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में सुख-संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अपनी समृद्धि को बनाएं रखेंगे। इससे आप समाज में आदरणीय व्यक्ति माने जायेंगे तथा आपका स्तर भी इसी के अनुकूल होगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। यद्यपि इसको अर्जित करने में आपकी योग्यता एवं अथक परिश्रम की बहुलता होगी तथापि पिता के द्वारा या सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इसके आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त मातृकारक चन्द्रमा की चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से माता का सहयोग भी सम्पत्ति अर्जित करने में आपके लिए सहायक सिद्ध होगा।

आप को गृहसुख भी अच्छा मिलेगा तथा किसी अच्छे घर में निवास करेंगे। यद्यपि यह अधिक विस्तृत नहीं होगा तथापि जो भी क्षेत्र आपको उपलब्ध होगा उसे सुन्दर एवं आकर्षक बनाने में तत्पर होंगे। साथ ही आधुनिक उपकरणों से भी घर को सुसज्जित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों के साथ आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं एक दूसरे को यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही उत्तम वाहन सुख अर्जित करने में भी जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोग उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होंगे। परिवार के सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य एवं अपनत्व का भाव होगा तथा समयानुसार आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपका भी माता के प्रति श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञापालन में तत्पर होंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे। इससे आप लोगों के आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।

आप प्रारंभ से ही ज्ञानार्जन के प्रति रुचिशील रहेंगे तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में उत्तीर्ण होंगे। अपनी इसी लगनशीलता एवं बुद्धिमता के कारण स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपका भविष्य उज्ज्वल होगा तथा मन में आत्म विश्वास के भाव की भी वृद्धि होगी जिससे कार्य क्षेत्र संबंधी प्रतियोगिताओं में अच्छी सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार शिक्षा की दृष्टि से यह स्थिति शुभ रहेगी। चन्द्रमा के चतुर्थ भाव में स्थिति के प्रभाव से आपको प्रारंभिक शिक्षा माता के द्वारा प्राप्त होगी।

चतुर्थ भाव में सिंह राशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जीवन में यदा कदा आप रक्त चाप संबंधी परेशानी का सामना कर सकते हैं। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः आपको युवावस्था से ही खान-पान पर ध्यान देना चाहिए तथा रक्त को प्रभावित करने वाली वस्तुओं का परहेज रखना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शुक्र भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सांसारिक एवं अन्य कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। आप कठिन से कठिन कार्य को आसानी से पूर्ण करने में भी समर्थ होंगे। यद्यपि वैदिक धर्म एवं दर्शन शास्त्रों में आपकी रुचि अल्प होगी परंतु आधुनिक साहित्य कविता एवं कला में आप पूर्ण रुचि रखेंगे। पाश्चात्य कला, संगीत एवं साहित्य के विशेष प्रेमी होंगे तथा इन क्षेत्रों में आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से ज्ञान अर्जित करके समाज में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में समर्थ होंगे। फलतः आपका सम्मान एवं विद्वता का प्रभाव समाज में बना रहेगा।

शुक्र की नीचस्थ स्थिति की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में आप अधिक लिप्त रहेंगे तथा अधिकांश प्रसंग आप मनोरंजन या मानसिक सन्तुष्टि के लिए स्थापित करेंगे। आपके प्रेम प्रसंग में आदर्श, यथार्थवाद एवं मर्यादा की भी कमी होगी। फलतः ऐसे क्षेत्र में आप अपने लिए अनावश्यक परेशानियां एवं अशान्ति उत्पन्न कर सकते हैं तथा वैवाहिक जीवन पर भी दुष्प्रभाव हो सकता है। अतः ऐसे प्रसंगों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए तभी आप सुखी रह सकते हैं।

पंचमभाव में नीचस्थ शुक्र की स्थिति से सन्तति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलम्ब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी परंतु वे सभी हठी एवं अभिमानी प्रवृत्ति के होंगे। माता पिता का कहना भी कम ही मानेंगे एवं एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव भी अल्प ही होगा। लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए। क्योंकि वे व्यावहारिक बुद्धि के स्वामी होंगे फलतः जीविकार्जन एवं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ रहेंगे। सुख में न सही लेकिन दुख में माता पिता का अवश्य ध्यान रखेंगे जिससे आपको किंचित मात्रा में मानसिक शान्ति की प्राप्ति होगी परंतु संतति पक्ष से आपको अधिक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए।

अध्ययन के प्रति बच्चों की रुचि सामान्य होगी तथापि परिश्रम पूर्वक वे वांछित शिक्षा अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि किसी मान्यता प्राप्त प्रशासनिक या अन्य क्षेत्रों में वे परिश्रम एवं पराक्रम से ही प्रवेश कर रखेंगे परंतु वाणिज्य क्षेत्र में योग्य सिद्ध होंगे तथा इसी से अपने जीवन में ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे। अतः इनके लिए आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि अपने लिए आपको पूर्ण धन संचय करके रखना चाहिए जेकि आपके सुख दुख के समय काम आएगा तथा बच्चों को स्वावलंबी छोड़ देना चाहिए एवं उनके कार्यों में दखल नहीं देना चाहिए। इससे आप तथा वे शान्ति एवं सन्तुष्टि अनुभूति करेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी व्ययशील एवं पित प्रकृति युक्त होता है परन्तु राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता तेजस्विता तथा भौतिकता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा साहस एवं पराक्रम का भी वे अवसरानुकूल प्रदर्शन करेंगी। वह एक भौतिकतावादी महिला होंगी जिससे पाश्चत्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनका पूर्ण झुकाव रहेगा। सांसारिक कार्यों में वह दक्षता का परिचय देंगी एवं अपने कौशलपूर्ण कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी।

आपकी पत्नी श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होगी एवं उनका कद भी सामान्य रहेगा यद्यपि अग्निगत राशि एवं शुष्क ग्रह राहु के प्रभाव से शारीरिक संरचना में पतलापन होगा लेकिन आकर्षण विद्यमान रहेगा। साथ ही अपने सौन्दर्य की अभिवृद्धि करने के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का भी समयानुसार प्रयोग करेंगी। उनके अंग प्रत्यंगों में भी पुष्टता रहेगी जिससे व्यक्तित्व में भी आकर्षण बना रहेगा एवं लोग उनसे प्रभावित होंगे इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों या वस्तुओं के प्रति मन में विशिष्ट लगाव रहेगा।

राहु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व कोई प्रक्रिया टूट भी सकती है। आपका विवाह सामान्यतया विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा परन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में आप अपनी इच्छा के अनुसार भी विवाह कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन यद्यपि सुखी रहेगा परन्तु दोनों अपनी स्वाभिमानी प्रवृत्ति तथा असहिष्णुता के भाव के कारण स्वयं के लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः यदि संयम से दोनों कार्य लें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार से सम्पन्न होगा एवं उनका सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी सामान्य रहेगी। सास ससुर से भी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी एवं एक दूसरे के प्रति सामान्य एवं स्नेह की भावना में न्यूनता रहेगी अतः विशिष्ट अवसरों पर ही आपका मेल मिलाप होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा एवं श्रद्धा का भाव नहीं होगा एवं सुख दुख में उनका कोई ध्यान नहीं रखेंगी साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्रव्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इससे परिवार में अशांति होगी।

साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी एवं इससे आपको व्यापार या किसी योजना में लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही शनि भी स्वराशि में स्थित होकर दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि एवं शनि दोनों वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

आपकी कुंडली में शनि योगकारक ग्रह होकर स्वग्रह में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते हैं। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यों से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

नवमेश-दशमेश शनि की दशम भावस्थ स्थिति के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

दशमेश शनि की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वाब्द सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वाब्द में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निर्धारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संघर्ष भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।